□□□□□ □□□□□□□ □□□

जनसत्ता 2 मई, 2014 : मोदी के गुजरात मॉडल का □क घोर असहज करने वाला सामाजिक पक्ष वहिपि के तोग□ यिा ने मौजूदा चुनावी दौर में दखािया□

□क वीडिओ में वह मोहल्ले में न□ बसे मुसलमि परविार को अपमानति कर बाहर खदे□ने के गुर मध्यवर्गीय हदिू स्त्री-पुरुषों के समूह के साथ चटखारे लेकर साझा करता है□ सांप्रदायकि दंगों की आंकि□ बाजी में इस पक्ष की प्राय: अनदेखी हो जाती है कि गुजरात में सांप्रदायकि आधार पर समाज वभिाजन का आक्रामक दौर थमा नहीं है□ गोधरा कांड के बाद वहां के □क वरषि्ठ पुलसि अधकिारी के साथ कामकाजी भोजन की □क दोपहर मुझे आज तक याद है, जसिमें स्थानीय पुलसि इंस्पेक्टर ने बनिा पूछे बार-बार हमें आश्वस्त करना जरूरी समझा था कि चकिन-करी कसिी मुसलमि स्रोत से नहीं है और, लहिाजा, ‘सुरक्षति’ है□ 2013 के मुजफ्फरनगर दंगे जैसे प्रकरण मुसलमि समाज को चुनाव में वकिास के मुकाबले सुरक्षा को प्राथमकिता देते रहने पर वविश करते है□

बहिार में वकिास-वरिोधी लालू यादव शासन की बेहद अक्षम और भ्रष्ट पारी मुसलमि मतों के दम पर इसीलि□ चलती रही□ अक्तूबर 1990 में आडवाणी की अयोध्या रथयात्रा, जो देश भर में मुसलमानों के लि□ आतंक का पर्याय बन चुकी थी, को रोक कर लालू ने सांप्रदायकि सुरक्षा का जो सक्किा जमाया वह अगले पंद्रह वर्ष तक कायम भी रखा□ संघी मोदी के लि□, लाख संवधिान के शासन का दावा करने के बावजूद, लालू बनना तो संभव नहीं□ हां, भाजपा इस पहेली को तो□ना चाहेगी कि 1984 के सखि दंगे कांग्रेस और गांधी परविार के लि□ उसी तरह चुनावी जवाबदेही का बायस नहीं बनते जैसे 2002 के गुजरात दंगे भाजपा और मोदी के लि□ बनते है□

आखरिकार दोनों अवसरों पर अल्पसंख्यक समुदाय को नशिाना बनाने वाली हसिा की प्रकृत और बर्बरता □क जैसी ही तो थी□ दोनों ही अवसरों पर सत्ताधारी दल के लोगों ने सरकार के सा□ तले खूनी तांडव कयिा था□ यहां तक कि 1984 में हसिा को रोकने में राज्य की नषि्क्रयिता को, 2002 में राज्य की हसिा में सक्रयि भागीदारी का रहिर्सल भी कहा जा सकता है□ दोनों में कानून भी अपना काम कर ही रहा है□ फरि क्यों न भाजपा को भी चुनाव-दर-चुनाव दंगे की जवाबदेही से मुक्त मलि, जैसे कांग्रेस को मलि चुकी है□

तो भी, हदिुत्व की वचिारधारा में कैद भाजपा और मोदी के लि□ गुजरात ‘प्रोग्राम’ को लेकर माफी मांगना संगत नहीं हो सका है□ लोकप्रयि प्रधानमंत्री अटल बहिारी वाजपेयी चाहने पर भी भाजपा की अंदरूनी राजनीत में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से ब□ नहीं हो सके थे□ संघ की भाजपा पर पक□ का असर था कि 2004 के लोकसभा चुनाव में पार्टी की अप्रत्याशति हार के कारणों पर वाजपेयी आधा सच ही बोल पा□, कि गुजरात दंगों की खासी भूमकिा रही पार्टी को हराने में□

पूरा सच बोलना संभव होता तो वे यह भी जो□ते कि प्रधानमंत्री के नाते अगर उन्होंने राजधर्म न नभिाने वाली मोदी सरकार को बर्खास्त कर दयिा होता तो मुसलमि मतों का कांग्रेस के पक्ष में व्यापक धुरुवीकरण न होता और भाजपा शर्तयिा जीतती□ आज, 2014 की मोदी मुहमि में भाजपा जसि मुसलमि स्वीकार्यता की जो□-तो□ में लगी है, दस वर्ष पूर्व वह वाजपेयी की झोली में गरिने के कगार पर थी□

इसे वडिंबना भी कह सकते हैं कि वहिपि के घृणा-दूत तोग□यिा ने सांप्रदायकि वषि-वमन से मोदी को नर्िणय के ऐन वाजपेयी वाले दोराहे पर ही लाकर ख□ा कर दयिा है□ चुनाव आयोग के नर्िदेश पर तोग□यिा के वरिुद्ध गुजरात पुलसि ने प्रथम सूचना रपिोर्ट दर्ज कर ली है□ अब गेंद, संकुचति सांप्रदायकि छवि से बाहर आने को लालायति मोदी के पाले में है□ लेकनि संघ, हदिुत्व और चुनावी संभावनाओं के बीच संतुलन बैठाने का जो जटलि खेल वाजपेयी नहीं खेल सके थे, क्या मोदी खेल पा□गे? परस्थितियिां इस लहिाज से भी समान हैं कि आज के मोदी के पास तोग□यिा को नकारने की उसी तरह की चुनावी वजहें हैं, जो तब के मोदी को नापसंद करने वाले वाजपेयी के पास हुआ करती थीं□

कहना होगा कि जान-बूझ कर नरेंद्रभाई ने गुजरात दंगों को लेकर माफी मांगने के वकि्ल्प से दो टूक कनिारा कर लयिा है□ प्रधानमंत्री पद की दावेदारी में उतरने के बाद से यह वकि्ल्प उन्हें घूर रहा होगा□ इसके बजाय उन्होंने चुनौती दे डाली कि दंगों के ल□ कसूरवार पा□ जाने पर बेशक चौराहे पर उन्हें फांसी दे दी जा□□ यह मुसोलनिी जैसा हश्र उनके हाथ में नहीं है, इतहिास के भी हाथ में नहीं है□ पर वे कांग्रेस से अलग जरूर दखिना चाहते हैं, जसिके नेताओं ने वर्षों तक चुप्पी के बाद अंतत: 1984 के सखि दंगों के ल□ माफी मांग ली थी, कानूनी उलझाव को न्योता देने के अलावा, मोदी के माफी मांगने से हदिुत्व के कट्टर समर्थकों का उनसे उख□ने का भी खतरा रहेगा, जो फलिहाल उनकी चुनावी राजनीति को गंवारा नहीं हो सकता□ चुनावी दौर में 'माफी' को देश का मुसलमि नेतृत्व पचा पा□गा, यह भी अनश्चिति है□

गुजरात के नयिोजति मुसलमि संहार पर मोदी की अपनी भूमकि को लेकर पक्ष और वपिक्ष में बहुत कुछ कहा गया है□ बेशक, दंगों से नपिटने में राज्य का पुलसि-प्रशासन, छटिपुट अपवादों को छो□ कर, पूरी तरह वफिल सद्धि हुआ था□ पर खुद मोदी की नीयत क्या थी, यह कैसे तय करें? उनके दाहनिे हाथ अमति शाह ने अब तर्क दयिा है कि गोधरा ट्रेन कांड से भावना□ इस कदर भ□की हुई थीं कि प्रशासन के ल□ स्थतिि पर □कदम नयिंत्रण पाना संभव नहीं था□ नश्चिति ही दंगों में हसिा की व्यापकता अभूतपूर्व थी□ कागजों में सेना और प□ोसी राज्यों से मदद भी मांगी गई□ लेकनि स्थतिि से नपिटने में न राज्य का प्रशासन उतावला दखिा और न राजनीतकि नेतृत्व ने कानून-व्यवस्था की मशीनरी पर जवाबदेही का अंकुश कसने की अधीरता दखिाई□

राज्य के जनि चंद पुलसि अधकिारयिों ने दंगाइयों के वरिुद्ध कार्रवाई का साहस दखिाया उन्हें तबादलों और जांचों से प्रता□ति कयिा गया□ दूसरी ओर जनिके अधकिार क्षेत्र में सार्वजनकि तौर पर बर्बरतम हसिक घटना□ भी हुएं, उन्हें मोदी शासन ने अभयदान देकर पूर्ववत कानून-व्यवस्था के पदों पर बना□ रखा□ इनमें से कई स्थानों पर पुलसि ने दंगाइयों पर अंतत: गोलयिां भी चलाएं, पर दो-तीन दनि तक हसिा नर्िबाध चलने के बाद□

दंगा-स्थलों से पुलसि का नदारद रहना या वहां समय पर न पहुंचना, मुकदमे दर्ज न करना, गरिफ्तारयिां न करना, अनुसंधान बंद कर देना, अपराधयिों का जमानत पर छूटना, पी□तिों और गवाहों को डरा-धमका कर या प्रलोभन से तो□ना, शासन के आम हथकंडे रहे□ वर्षों बाद जब नागरकि समूहों की पहल पर सर्वोच्च न्यायालय ने मोदी सरकार से हसिाब-कताब मांगना शुरू कयिा, तब जाकर अनुसंधानों ने गतपिकड़ी, गरिफ्तारयिां हुएं और अदालतों में सुनवाई आगे ब□ सकी□

प्रधानमंत्री वाजपेयी की तत्कालीन गोधरा/ गुजरात यात्राओं में वशिेष सुरक्षा दल की ओर से समन्वय करने के दौरान मैंने पाया कि राज्य के नौसखिया मुख्यमंत्री ने सांप्रदायकि आधार पर पुलसि में तैनाती की बाकायदा मुहमि चला रखी थी□ गोधरा में कारसेवकों की ट्रेन के दो डब्बिों को अचानक जलाने से

हुई हृदयवदिारकमौतों को लेकर राज्यव्यापी हसिा फूटने पर गुजरात पुलसि में कानून-व्यवस्था का □कभी पद ऐसा नहीं था, जसि पर कोई मुसलमान तैनात रहने दयिा गया हो□ स्पष्ट ही यह कवायद 2002 के अंत में होने वाले वधिानसभा चुनाव की सामरकितैयारी का हस्सिा थी□ उस समय तकमोदी और तोग□यि□कही थैली केचट्टे-बट्टे होते थे□ सांप्रदायकिध्रुवीकरण केसा□ में हु□ चुनाव ने मोदी का मुख्यमंत्रत्वि पक्का कर दयिा□ अमति शाह को गृह राज्यमंत्री बना कर गुजरात पुलसि केमोदीकरण, दंगों पर नयिोजति लीपापोती और राजनीतकिमुठभेो/ नगिरानयिों की मुहमि को शह दी गई□

मोदी केआक्रामकसांप्रदायकि□जेंडे से वाजपेयी की समन्वयकारी राजनीतकिछवि का तालमेल संभव नहीं था□ वे व्यक्तगित स्तर पर भी मोदी से दूर दखिना चाहते थे□ हमिाचल केदौरों में, जहां वाजपेयी छुट्टयिां मनाने केशौकीन थे, हदिायत होती कि□प्रदेश का प्रभारी महासचवि होने केबावजूद मोदी को प्रधानमंत्री की कार या हेलीकॉप्टर में जगह न दी जा□□ स्वाभावकिथा कि□वाजपेयी चाहते कि□मोदी केपूर्ववर्ती केशूभाई पटेल ही, जो दुर्भाग्य से □क वर्ष पहले केभयानकतबाही वाले भुज भूकंप में अपनी साख खो चुकेथे, गुजरात सरकार केमुखयिा बने रहें□

पर सामान्य तौर पर कयास था कि□पटेल केढीले नेतृत्व में भाजपा दसिंबर 2002 में आ रहे राज्य वधिानसभा केचुनाव शायद ही जीत सकें□ इससे, अक्तूबर 2001 में, गुजरात से वर्षों से दूर रखे ग□ महत्त्वाकांक्षी मोदी की ताजपोशी की राह खुल गई□ संघ का सोच था कि□चुनाव से पहले केशूभाई सरकार की कमजोर प्रशासनकिछवि को सांगठनकिपहलों से मजबूत कयिा जा□□

गुजरात का मुख्यमंत्री बनने से पूर्व मोदी ने शासन में कभी किसी पद पर कार्य नहीं कयिा था□ संघ और पार्टी केदायत्वों से लंबे समय से जु□ाव केचलते सांगठनकिक्षमता जरूर उनकी जमा-पूंजी रही होगी, हालांकि□इससे उनकेप्रशासनकिअभाव की भरपाई नहीं हो सक्ती थी□ दरअसल, चार माह पुराने मुख्यमंत्री की गोधरा कांड केसमय की स्थति, इंदरि गांधी की 1984 में हत्या से भ□की हसिा केसमय, प्रशासनकिपक□ में केरे प्रधानमंत्री राजीव गांधी जैसी ही थी□

राजीव की तो बल्कि□सांगठनकिसमझ भी अभी अधकच्चरी थी□ उनकेराजधर्म में नजिी भावुक्ता□ं हावी हो गर्इं- 'जब ब□ा पे□ गरिता है तो धरती हलिती है□' धरती हलिाने केलि□ उत्तेजति भी□ आयोजति की गई, आगजनी-लूटपाट-कत्ल-बलात्कार हु□□ 2002 में, मोदी ने सांगठनकितर्क- 'क्रयिा की प्रतक्रियिा' के आगे ब□ाया□ प्रशासनकिरूप से यह शैतानी बचकानापन ही सद्धि हुआ□ न 'प्रतक्रियिा' को सांगठनकिक्षमता से नयिंत्रति करना संभव रहा और न दो-तीन दनि की 'नरि्धारति' अवधि में समेटना□

दरअसल, दोनों अवसरों पर राज्यसम्मत हसिा का तो□ देने में भारतीय तंत्र असमर्थ रहा□ मंत्रमिंडल की सलाह से बंधे राष्ट्रपतिऔर दलगत राजनीतसिे बंधी संसद जैसे 1984 में दर्शकबने रहे वैसे ही 2002 में भी□ सर्वोच्च न्यायालय केपास, कम से कम गुजरात केसंदर्भ में, संवधिान की धारा 356 केअंतर्गत यह व्यवस्था देने का वकि□प था कि□राज्य की तत्कालीन परस्थितियिों में संवैधानकितरीकेसे सरकार नहीं चलाई जा सक्ती□ उस हालत में केंद्र केलि□ मोदी सरकार को बर्खास्त कर गुजरात में राष्ट्रपतिशासन लगाना अनविार्य हो जाता□ पर 'जलते रोम में बांसुरी बजाते नीरो' को बस वे जबानी खरी-खोटी सुनाते रहे□ मीडयिा ने मोदी सरकार को कठघरे में ख□ा तो रखा, पर वह प्रशासन का न हाथ पक□ सक्ती थी और न सजा दे सक्ती थी□

2014 केचुनावी दौर में भाजपा केलि□ लाभदायकमानी जा रही मोदी की दबंग वकि□स-पुरुष की छवि□दस साल पहले वाजपेयी के'इंडयिा शाइनगि' अभयिान केसमय शैतानी वनिाश-पुरुष वाली मानी जाती थी□ यह परविर्तन संभव है? बहुत से लोग मानते है कि□प्रधानमंत्री बनने केबाद मोदी भाजपा में अपने वरिोधयिों की छुट्टी कर देंगे□ पर जसि पा□ का इन्क्लूसवि राष्ट्रीय नेतृत्व मोदी ध□ा परोस रहा है, उसकेलि□ तो राष्ट्रीय स्वयंसेवकसंघ को भी

छुट्टी पर भेजना होगा! मोदी के समय में माफी इसीलिए जटिल है

पेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta